संस्कृत साहित्य परिचायिका

डा. लेखराम शर्मा



संस्कृत साहित्य परिचायिका

(आधुनिक शैली)

लेखक

डॉक्टर लेखराम शर्मा

भूमिका

'संस्कृत साहित्य परिचायिका' पुस्तक के अवलोकन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। लेखक ने इस पुस्तक में संस्कृत वाङ्गमय सम्बन्धी विस्तृत ज्ञान-राशि को बड़े कौशल से संजोने का स्तुत्य प्रयास किया है। इस में कई तथ्यों को बड़े परिश्रम के साथ प्रस्तुत किया गया है। लेखक ने इस छोटी सी पुस्तक में ढेर सारी जानकारी को गागर में सागर की तरह समाविष्ट करने में सफलता प्राप्त की है। पुस्तक उपयोगी तथा ज्ञानवर्धक है। विद्यार्थियों तथा विद्वानों दोनों के लिए ही इसका सामान महत्त्व है। इसमें बहुत सी ऐसी ज्ञातव्य जानकारियां प्राप्त होती हैं, जिनकी ओर साधारणतया बहुत कम लोगों का ध्यान जाता है।

हो सकता है कि कुछ ज्ञातव्य बातें छूट गई हों। पुस्तक के पाठकों तथा विद्वानों तक पहुँचाने पर उनके सुझाव तथा नई जानकारी के लेखक को प्राप्त होने पर इसमें और नई जानकारियों की वृद्धि होगी। इस पुस्तक के दूसरे संस्करण में लेखक तथा विद्वानों के प्रयत्न तथा सहयोग से यह और अधिक पूर्ण तथा उपयोगी बन सकेगी।

लेखक का प्रयास स्तुत्य तथा महत्त्वपूर्ण है। आशा है इस प्रयास को विद्वानों का पूर्ण समर्थन तथा सहयोग प्राप्त होगा। लेखक के परिश्रम की सार्थकता इसी में है कि इस पुस्तक से पाठक लाभान्वित हों। मुझे इस पुस्तक की लोकप्रियता की पूर्ण कामना है।

-डॉक्टर ईश्वरी दत्त शर्मा, राजकीय संस्कृत महाविद्यालय, सोलन (हि. प्र.)

वैधानिक टिप्पणी (लीगल डिस्क्लेमर)

इस साहित्य सम्बंधित पुस्तिका को किसी पूर्वनिर्मित साहित्यिक रचना की नक़ल करके नहीं बनाया गया है। फिर भी यदि यह किसी पूर्वनिर्मित रचना से समानता रखती है, तो यह केवल मात्र एक संयोग ही है। इसे किसी भी दूसरी धारणाओं को ठेस पहुंचाने के लिए नहीं बनाया गया है। पाठक इसको पढ़ने से उत्पन्न ऐसी-वैसी परिस्थिति के लिए स्वयं जिम्मेदार होंगे। हम वकील नहीं हैं। यह पुस्तक व इसमें लिखी गई जानकारियाँ केवल शिक्षा के प्रचार के नाते प्रदान की गई हैं, और आपके न्यायिक सलाहकार द्वारा प्रदत्त किसी भी वैधानिक सलाह का स्थान नहीं ले सकतीं। छपाई के समय इस बात का पूरा ध्यान रखा गया है कि इस पुस्तक में दी गई सभी जानकारियाँ सही हों व पाठकों के लिए उपयोगी हों, फिर भी यह बहुत गहरा प्रयास नहीं है। इसलिए इससे किसी प्रकार की हानि होने पर पुस्तक-प्रस्तुतिकर्ता अपनी जिम्मेदारी व जवाबदेही को पूर्णतया अस्वीकार करते हैं। पाठकगण अपनी पसंद, काम व उनके परिणामों के लिए स्वयं जिम्मेदार हैं। उन्हें इससे सम्बंधित किसी प्रकार का संदेह होने पर अपने न्यायिक-सलाहकार से संपर्क करना चाहिए।

वैदिक साहित्य

ऋग्वेद में मन्त्र- 1100

8 वें मंडल के ऋषि- कण्व एवं अंगिरा

सविनियोग मन्त्र- कृष्ण यजुर्वेद

शुक्लयजुर्वेद के ऋषि- याज्ञवल्क्य

शुक्लयजुर्वेद (वाजसनेयि संहिता)- 40 अध्याय

अथर्ववेद के काण्ड- 20

अथर्ववेद के सूक्त- 731

अथर्ववेद के मन्त्र- 5849

अथर्ववेद में ऋग्वेद के मन्त्र- 1200

अथर्ववेद में गद्यभाग- संहिता का छटा भाग

ऋग्वेद की उपलब्ध शाखा- आश्वलायन

आश्वलायन शाखा की संहिता- शाकाल (एक मान्यता)

ऋग्वेद की ऐतरेय शाखा में ग्रन्थ- ३ (ब्रा. , आ., उप.)

ऋग्वेद की आश्वलायन शाखा में ग्रन्थ- 2(श्रौ. एवं गृ. सू.)

यजुर्वेद की कठ शाखा की संहिता- काठक

यजुर्वेद की कठकापिष्ठल शाखा की संहिता- कापिष्ठल

यजुर्वेद की मैत्रायणी (कलाप) के सूत्र- मानव श्रौत एवं गृह्य

यजुर्वेद की मैत्रायणी की उपशाखा- वाराह

यजुर्वेद की आपस्तम्ब एवं हिरण्यकेशी- तैत्तिरीय शाखा

कृष्णयजुर्वेद की प्रधानशाखा- तैत्तिरीय

शुक्लयजुर्वेद की प्रधानशाखा- माध्यन्दिन

माध्यन्दिन शाखा की उच्चारण विशेषता- ष को ख

काण्वशाखा का प्रचार- दक्षिणी भारत

यजुर्वेद की उपलब्ध शाखाएं- कौथुम, राणायनीय और जैमिनीय

ताण्ड्य ब्रा., षडिवंश ब्रा., छान्दोग्योपनिषद- कौथुम शाखा

खदिर गृह्यसूत्र- राणायनीय शाखा

केनोपनिषद तथा उपनिषदब्रा.- जैमिनीय शाखा

अथर्ववेद की प्राप्त शाखाएँ-2

प्रश्नोपनिषद-पिप्पलाद संहिता

गोपथ ब्रा0, मुण्डकोपनिषद-शौनक संहिता

वैदिक छंदों की विशेषता-अक्षरगणना

ऋग्वेद के छंद(सर्वानुक्रमणिका)-कात्यायन

ऋग्वेद के छंद(सर्वानुक्रमणिका)-ऋकप्रातिशाख्य

ऋग्वेद में गायत्री छंद-2467

ऋग्वेद में त्रिष्टुप छंद-4253

ऋग्वेद में बृहती छंद-181

ऋग्वेद में सर्वेश्वरवाद-पुरुषसूक्त

शुनःशेपाख्यान मण्डल-1

पुरुरवा-उर्वशी मंडल-10

पुरुरवा-उर्वशी मंडल-शतपथ ब्रा0 (कांड 1)

ऐतरेय ब्रा० के रचयिता-महीदास ऐतरेय

ब्रा० के3 भाग-ब्रा०, आ०, उप०

कौशीतकि ब्रा० का अंतिम भाग-अद्भुत ब्रा०

वाजसनेयी संहिता के आरम्भिक-शतपथ ब्रा०

18 कांडों की व्याख्या-(14 कांड 100 अ०)

गोपथ ब्रा० (दो खंड)-अथर्ववेद

प्रस्थानत्रयी-उपनिषद, गीता, ब्रह्मसूत्र

उपनिषद का मुख्यार्थ-ब्रह्मविद्या

मुक्तिकोपनिषद में उपनिषद संख्या- 108

ऐतरेय और कौषीतकि उपनिषद- ऋग्वेद से संबंधित

तैत्तिरीय, कठ,श्वेताश्वतर उपनिषद-कृष्णयजुर्वेद से संबंधित

ईशावास्योपनिषद एवं बृहदारण्यक उपनिषद-शुक्लयजुर्वेद से संबंधित

छान्दोग्य और केन उपनिषद-सामयजुर्वेद से सम्बंधित

शांकर भाष्ययुक्त उपनिषदें(11)-ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुंडक, माण्डूक्य, तैत्तिरीय, ऐतरेय, छान्दोग्य, बृहदारण्यक, नृसिंहपूर्व

सबसे प्राचीन उपनिषदें- छान्दोग्य, बृहदारण्यक

ऋग्वेद के ऋषियों का विवरण-आर्षानुक्रमणी

ऋग्वेद के छंदों का विवरण- छंदोS नुक्रमणी

ऋग्वेद के देवता का विवरण- देवतानुक्रमणी

सायण भाष्य से रहित संहिताएँ- ऋग्वेद, तैत्तिरीय संहिता, कण्व संहिता, साम संहिता, अथर्व (माध्य०)

सबसे प्राचीन धर्मसूत्र- गौतम (राणा०)

अथर्ववेद का प्रथम ज्ञाता-अंगिरा

ऋग्वेद का प्रथम ज्ञाता-अग्नि

यजुर्वेद का प्रथम ज्ञाता- वायु

सामवेद का प्रथम ज्ञाता- आदित्य

मैक्समूलर द्वारा संपादित शाकल शाखा के प्रकाशक- 'सैक्रेड बुक ऑफ द ईस्ट' इंग्लैंड

मैक्समूलर के अनुसार ऋग्वेद रचना- 1200 ईस्वी पूर्व

मैकडानल के अनुसार ऋग्वेद रचना- 6000 ईस्वी पूर्व

तिलक के अनुसार ऋग्वेद रचना- 6500 ईस्वी पूर्व

ब्रा० ग्रन्थानुसार नक्षत्रगणना कृत्तिका से

सप्तसैंधव के चारों ओर 4 समुद्र- ऋ० मं० 9-10

सरस्वतीवर्णन- ऋग्वेद

ऋग्वेद का उपवेद- आयुर्वेद

यजुर्वेद का उपवेद- धनुर्वेद

सामवेद का उपवेद- गान्धर्ववेद

अथर्ववेद का उपवेद- अर्थ वेद

अष्टक- आठ अध्याय

अध्यायों का विभाग- वर्गों में

वर्ग में मन्त्र- 5

वर्ग- 2006

अध्याय- 64

मण्डलक्रम के अनुवाक- 85

शौनक के अनुसार ऋग्वेदमन्त्र-10580

ऋग्वेद में कुल शब्द-153826

अधिक संगठित मण्डल- 2 से 8

मण्डल 2 के ऋषि- गृत्समद

मण्डल 3 के ऋषि- विश्वामित्र

मण्डल 4 के ऋषि- वामदेव

मण्डल 5 के ऋषि- अत्रि

मण्डल 6 के ऋषि- भारद्वाज

मण्डल 7 के ऋषि- वसिष्ठ

मण्डल 8 के ऋषि- कण्व एवं वंशज

अनेक ऋषियों वाले मण्डल- 1,9,और 10

पूर्ण सोमविषयक मण्डल- 9 (पवमान)

सबसे संगठित मण्डल- 9

ऋग्वेद का सबसे महान देवता- इंद्र (10/28 सूक्त)

इंद्र का पिता- द्यौ

इंद्र का प्रमुख शत्रु- वृत्र

इंद्र का प्रतिद्वंद्वी- सुदास

अग्नि से सम्बंधित सूक्त-200

अग्नि की माता-अरणि

अग्नि के3 3 स्थान- काष्ठ, जल और द्युलोक

देवसमूह-मरुत

सूर्य का पिता-द्यौ

सूर्य की माता-अदिति

उषा से सम्बंधित सूक्त(प्रमुख देवी)-20

काले दैत्य के द्वारा उषा को गुफा में बंद करना-शतपथब्राह्मण

सोम की स्तुति वाले मण्डल-120

सोम का प्राप्ति स्थान-मुंजवानपर्वत

केवल एक ही सूक्त में वर्णित देवता-वास्तोष्पति

वाक के पिता-ऋम्भण

स्वास्थ्य का देवता-रुद्र

परलोक का प्रथम अनुसंधाता-यम

यम का स्थान-अंतरिक्ष

पुरुष का पिता-हिरण्यगर्भ

सप्तसिंधु-गंगा, यमुना, दृषद्वती, सरस्वती, सिन्धु, विपाशा, शुतुद्री

ऋग्वेद में नदीवर्णन- 10-75-1

सबसे विस्तृत नदी-सिंधु

सरस्वती का सागर से मिलन-राजस्थान में

त्रिपाद छंद-गायत्री, उष्णिक्र

चतुष्पाद छंद-अनुष्टुप, बृहती, त्रिष्टुप, जगती

पँचपाद छंद-पंक्ति

वेदों में अधिक छंद-वार्णिक

वेदार्थनिर्धारक-स्वराघात

अतिरिक्त वैदिक स्वर-लृ

वेद में 11 वां लकार-लेट्

स्वराघात वाली भाषा-जर्मन

अनुदात्त का चिह्न- _--

उदात्त- _ नहीं होता

प्रामाणिक पाठ-संहिता

पदपाठ का प्रणेता-शाकल्य

कुल पाठविधियाँ-5

पुरुषसूक्त-10/90

यागयिक भाष्यकार-सायण

ऋग्वेदकालिक प्रधानयुद्ध-दाशराज

राजा सुदास-सूर्यवंशी

ऋग्वेदकालीन प्रमुख अन्न-जौ

ऋग्वेदकालीन प्रमुख वृक्ष-पीपल

1 घोड़े का मूल्य-1000 गाएँ

सिक्का(मुद्रा)-निष्क या निषक

ऋग्वेद कालीन शल्यचिकित्सक-अश्विनी

ऋग्वेदकालीन मरुस्थल-सिंध

ऋग्वेदकालीन सूर्यमार्ग-5049 योजन

ऋतु एकत्व-हेमन्त-शिशिर

मन्त्रसर्वस्व के लेखक-भारद्वाज

सबसे प्राचीन टीकाकार (अपूर्ण)-स्कंद स्वामी

विजयनगर के राजा बुक्क के गुरु-सायण

विजयनगर के राजा हरिहर के मंत्री-सायण

सायण के पिता- मायण

सायण की माता-श्रीमती

सायण के गुरु-श्रीकंठ

सायण के बड़े भाई(बुक्क के मंत्री)-माधव

स्वामी दयानंद का भाष्य-ऋक(अपूर्ण) और माध्यंदिन शाखा

वेदों का प्रथम पाश्चात्य भाष्यकार-कॉलब्रुक

मैक्समूलर द्वारा संपादित भाष्य के पृष्ठ-3000

वेदसंहिताओं के संकलयिता-व्यास

यज्ञ में ऋत्विक-4

अर्घ्वयु से सम्बंधित वेद-यजुर्वेद

सामवेद में मौलिक(अपने)मन्त्र-75

ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण विभाग-मण्डल

ऋग्वेद में मन्त्र-10580

ऋग्वेद में प्रयुक्त छंद-14

ऋणिकाएँ-गोधा, विश्ववारा

प्रार्थित देवता-79

आकाश के देवता-सूर्य, विष्णु, उषस्

अंतरिक्ष के देवता-इंद्र, वरुण, रुद्र, पर्जन्य

पृथिवी के देवता-अग्नि, नदी, समुद्र

अमूर्त के देवता-श्रद्धा,मनु, अदिति

माध्यन्दिन संहिता के मंत्र-1900

कृष्णयजुर्वेद के मंत्र-18000

वेदाङ्ग-6

उच्चारण विधि-शिक्षा

कल्पसूत्र(श्रौत-गृह्य-धर्म)-कर्मकाण्ड

स्मृतियों का आधार-सूत्र

प्रातिशाख्यों का विषय-व्याकरण

ऋकप्रातिशाख्य का कर्ता-शौनक

यजु०प्रातिशाख्य का कर्ता-कात्यायन

निघण्टु(वैदिक शब्द)की व्याख्या-निरुक्त

वेदांगज्योतिष का लेखक-लगध

पाणिनि के अनुसार वैदिक संस्कृत का नाम-कृन्दस

दस्युवीर-वृत्र और शम्बर

अथर्ववेद में ऋग्वेदमन्त्र-काण्ड 19-20 में

यजुर्वेद का अधिक भाग-गद्य

भाषा की दृष्टि से नवीन मण्डल-1-10 (ऋक)

ऋग्वेद में वंशमण्डल-2 से7 तक

प्रत्येक मण्डल के आरंभिक सूक्तों का देवता-अग्नि

अथर्ववेद में मन्त्र-5849

ब्राह्मणों और आरण्यकों की रचना-गद्य में

गद्य-पद्य मिश्रण (नवीन)-केनोपनिषद

गद्यमय उपनिषद(प्राचीन)-वृहदारण्यक, छान्दोग्य

माण्डूक्योपनिषद की रचना-गद्य में

पुरुष-प्रजापति-ब्रह्म(विकास)-ऋक-ब्रा०-उप०

देवता को बुलाने वाला ऋत्विक-होता

आरण्यकों से सम्बंधित आश्रम-वानप्रस्थ

वेदाङ्गों की भाषा-लौकिक संस्कृत

वैदिक यज्ञ-श्रौतसूत्र

यज्ञवेदिका की रचना-शुल्वसूत्र

विश्व का प्राचीनतम ग्रन्थ-ऋग्वेद

आर्यों का मूलस्थान-सप्तसिंधु

जिसका कर्ता कोई व्यक्ति विशेष नहीं-अपौरुषेय

ऋषिकाएं-लोपामुद्रा, अपाला, रोमशा

बड़े मण्डल(ऋक)उत्तरवर्ती-1 और 10

सबसे प्राचीन मण्डल-7

शुक्लयजुर्वेद के अध्याय-40

शिवसंकल्प वाला अध्याय-34

ईशावास्योपनिषद वाला अध्याय-40 वां

सर्वाधिक भाष्य(वेदों में)-यजुर्वेद पर

पूर्वार्चिक-उत्तरार्चिक-सामवेद

सर्वाधिक गेय-ग्रामगेय

वर्जितराग-आरण्यगान

ऊह्यगान का सम्बन्ध-आरण्यगान से

अथर्ववेद(रचयिता 2)-ब्रह्मवेद(दूसरा नाम)

शांतिपरक मन्त्रों के द्रष्टा-अथर्वा

प्रतिसूक्त वर्ण्यविषय-1-1

आरम्भिक काण्ड-यांत्रिक

4 मन्त्रों वाले सूक्तों का काण्ड-1

8 मन्त्रों वाले सूक्तों का काण्ड-5

1-2 मन्त्रों वाले सूक्तों का काण्ड-7

कौषीतकि ब्राह्मण का कर्ता-कहोड़

शुक्लयजुर्वेद के शतपथ ब्राह्मण-2(प्रतिशाखा)

माध्यन्दिन शतपथब्राह्मण में काण्ड-14(अध्याय 100)

काण्वशतपथ के अध्याय-104(काण्ड 17)

ऋग्वेद के बाद दूसरा बड़ा ग्रन्थ-काण्वशतपथ

शतपथब्राह्मण का अंतिम भाग-बृहदारण्यकोपनिषद

ब्रात्यों का शुद्धिकरण-ताण्ड्य ब्राह्मण में

वैज्ञानिक सामग्री-जैमिनीय ब्राह्मण में

विभिन्न ब्राह्मणों से संकलित सामग्री-गोपथ(अथर्ववेद)में

उपलब्ध आरण्यक-7

उपनिषदों के फारसी अनुवादक-दाराशिकोह

उपनिषदों का फ्रांसीसी प्रेमी-शापेनहावर

ऋग्वेद से सम्बद्ध उपनिषद- ऐतरेय-कौषीतकि

छान्दोग्य और केन उपनिषद-सामवेद से संबंधित

माण्डूक्योपनिषद का सम्बंध-अथर्ववेद से

माण्डूकयोपनिषद के वाक्य-12

ईशोपनिषद के मन्त्र-17

जनक और याज्ञवल्क्य का शास्त्रार्थ-बृहदारण्यकोपनिषद

उपनिषदकालीन विदुषियां-मैत्रेयी(याज्ञवल्क्य की पत्नी तथा गार्गी)

उपनिषदों में व्याख्यात ब्रह्म के 3 लक्षण-सत, चित और आनन्द

निघण्टु में अध्याय(वेदों के कठिन शब्द)-5

निरुक्त में अध्याय(निघण्टु की व्याख्या)-14

आर्च ज्योतिष में श्लोक-36

बृहददेवता के अध्याय एवं श्लोक-8-1204

अथर्ववेद का परिशिष्ट-सर्वानुक्रमणी

वेदार्थ की कुंजी-निरुक्त

सिन्धु घाटी की तत्कालीन सभ्यता और संस्कृति-ऋग्वेद

सृष्टिरहस्य-नासदीयसूक्त

ऋग्वेद का अंतिम सूक्त-संज्ञान(जनतंत्र)

प्रमुख दस्यु-शम्बर

पुरुषसूक्त के ऋषि-नारायण

सबसे बड़ी अनुक्रमणिका-बृहददेवता

प्रधान प्रस्थान-उपनिषद

ईशावास्योपनिषद का ऋषि-दध्यंगाथर्वण

व्याकरण साहित्य

[वेदब्रह्म का जैवीकरण संस्कृत साहित्य की एक महती विशेषता है। यह जैवीकरण संस्कृत साहित्य के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। व्याकरण को वेदरूप जीव का मुख कहा गया है। इसलिए यह वेदार्थ को समझने में प्रमुख अंग अथवा साधन माना गया है।]

आर्यभाषा की शाखाएँ-2

ग्रीक, लेटिन, ट्यूटानिक, फ्रेंच, जर्मन और अंग्रेजी आदि-पश्चिमी शाखा

पूर्वी शाखा के विभाग-2

ईरानी2 विभाग का प्रमुख ग्रन्थ-जेंद अवेस्ता

प्राचीनतम आर्यभाषा(भारतीय विभाग)-संस्कृत

पाणिनि के द्वारा संस्कृत के लिए प्रयुक्त शब्द-भाषा

पाणिनि का निवासस्थान-शालातुर(तक्षशिला)

पाणिनिकृत सूत्रों के प्रकार-6(संज्ञादि)

उपदेश की सर्वप्रथमकल्पना-मुनित्रय

अच् (स्वर) प्रत्याहार-9

हल् प्रत्याहार में-व्यंजन(समस्त)

समस्त वर्ण-अल् प्रत्याहार में

वर्णसमाम्नाय-18 सूत्र(14)

कुल प्रत्याहार-42

अच् के उदात्तादि भेद-3

उदात्तादि अचों के ह्रस्वादि भेद-3×3=9

ह्रस्वोदात्तादि अच् के अनुनासिकादि भेद-9×2=18

दीर्घ नहीं होता-लृ(12 भेद)

ह्रस्व नहीं होते-एच् (12 भेद)

18 भेद वाले वर्ण(अच्)- 4 (अ, इ, उ, ऋ)

आभ्यन्तर प्रयत्नों के भेद-5 (स्पृष्टादि)

अष्टाध्यायी का अंतिम सूत्र-अ अ

बाह्यप्रयत्नों के भेद-11(विवारादि)

जिह्वामूलीय और उपघ्मानीय का ध्वनि चिह्न- (-पर यह चिह्न टेढ़ा है, मतलब इसका गड्ढा ऊपर की तरफ और कूबड़ नीचे की तरफ है, और) - यह चिह्न उल्टा टेढ़ा है, मतलब इसका गड्ढा नीचे की तरफ और कूबड़ ऊपर की तरफ है।

सवर्ण ऋ और लृ के भेद- 30-30

य, व और ल के भेद(2-2)- अनु० एवं अननु०

अष्टाध्यायी में उल्लिखित वैय्याकरण-10

अष्टाध्यायी में अध्याय-8

अष्टाध्यायी में पाद-32

अष्टाध्यायी में सूत्र-3955

एक पाद में न्यूनतम सूत्र-38

एक पाद में अधिकतम सूत्र-220

पाणिनि का मूलनाम-आहिक

पाणिनि के पिता-शालङ्कि

पाणिनि की माता-दाक्षी

पाणिनि के गुरु-वर्ष

शब्द को धातुज मानने वाले-शाकटायन

शब्द को अधातुज मानने वाले-पाणिनि

तैत्ति० सं० के अनुसार व्याकरण के प्रथम प्रवक्ता-इंद्र

स्फोटसिद्धान्त के प्रथम प्रवक्ता-स्फोटायन

शब्दानुशासन(संस्कृत शब्द नियमन)-अष्टाध्यायी

वरदराज के गुरु-भट्टोजिदीक्षित

नृत्तावसाने नटराज इत्यादि-नंदिकेश्वरकारिका में

पाणिनि की शिक्षा-तक्षशिला में

गोणिकापुत्र-पतञ्जलि

अष्टाध्यायी पर सर्वोत्तम वृत्ति-काशिका

काशिका के लेखक-जयादित्य-वामन

महाभाष्य पर 'प्रदीप' टीका-कैयट

प्रथम प्रक्रियाग्रन्थ 'प्रक्रिया कौमुदी'- रामचंद्र

वैय्याकरण सिद्धांत कौमुदी (अष्टाध्यायी के पूरे सूत्र)-भट्टोजिदीक्षित

शब्देन्दुशेखर(सि० कौ० टीका)-नागेश भट्ट

भट्टोजिदीक्षित-महाराष्ट्रीय

भट्टोजिदीक्षित के पिता का नाम-लक्ष्मीधर भट्ट

भट्टोजिदीक्षित के गुरु-शेषकृष्ण

भट्टोजिदीक्षित के पुत्र-भानुजिदीक्षित

भट्टोजिदीक्षित के पौत्र-हरिदीक्षित

सिद्धांत कौमुदी पर प्रौढ़मनोरमा टीका-भट्टोजिदीक्षित

सिद्धांत कौमुदी पर बालमनोरमा टीका-वासुदेव वाजपेयी

सिद्धांतकौमुदी का सार (वरदराजकृत)-मध्य कौमुदी

सिद्धांतकौमुदी से भिन्न क्रम (वरदराज कृत)-लघुसिद्धांत कौमुदी

मध्यकौमुदी में सूत्र-2315

लघुसिद्धांत कौमुदी में सूत्र-1272

वरदराज(दाक्षिणात्य)के पिता-दुर्गातनय

वरदराज के गुरु-भट्टोजिदीक्षित

लघुसिद्धांत कौमुदी में प्रकरण-12

अनुबंधानुसार व्याकरण का प्रयोजन-शब्दज्ञान

अनुबंधानुसार व्याकरण का विषय-शब्दसाधन

लघुसिद्धांत कौमुदी में संधियाँ-3

समास भेद-4

स्वर संधि भेद-7

व्यंजन संधि भेद-12

विसर्गसंधि भेद-4

गण-10

व्याकरण के प्रयोजन (रक्षादि)-5

गोष्पद- पाणिनि व्याकरण

चतुस्सहस्त्री सूत्राणां पँचसूत्री विवर्जिता-सिद्धांतकौमुदी की तत्त्वबोधिनी टीका

कात्यायन द्वारा व्याख्यात पातंजल सूत्र-1250

वार्तिक संख्या-4000

महाभाष्य की शैली-प्रश्नोत्तर

महाभाष्य का विषयक्रम-अष्टाध्यायीवत

एक दिन में अध्यापित अंश-आह्निक

प्रथम आह्निक-पस्पश

पाणिनि, कात्यायन और पतञ्जलि-त्रिमुनि

काशिका पर न्यासटीका-जिनेन्द्रबुद्धि

काशिका पर पदमन्जरी टीका-हरदत्त

प्रौढ़ मनोरमा पर 'मनोरमाकुचमार्दिनी' टीका-पण्डितराज जगन्नाथ

वैय्याकरण भूषण सार (व्या-दर्शन)-कौंड भट्ट

लघु मञ्जूषा और परमलघुमंजूषा-नागेश भट्ट

व्याकरण के प्रयोजन-पस्पशाह्निक

मन्त्रों का कर्मकांडानुसार परिवर्तन-ऊह(प्रयोजन)

पूर्वपदप्रधान-अव्ययीभाव

उत्तरपद प्रधान-तत्पुरुष

उभयपद प्रधान-द्वंद्व

अन्यपद प्रधान-बहुव्रीहि

तत्पुरुष के दो भेद-द्विगु-कर्मधारय

कण्ठ के ऊर्ध्वभाग से उच्चारित-उदात्त

कण्ठ के अधोभाग से उच्चारित-अनुदात्त

कण्ठ के दोनों भागों से उच्चारित-स्वरित

पाणिनि का स्थितिकाल-बुद्धपूर्व

सांख्यायन ब्राह्मण के अनुसार विशुद्ध संस्कृत-उदीच्य

वाक्यों से पदों का संकलन-अष्टाध्यायी अध्याय 1 1 से 3

पदों का प्रकृति-प्रत्ययपरक विभाग-अष्टाध्यायी अध्याय 4-5

आगमादि आदेश-पदनिर्माण-अष्टाध्यायी अध्याय 6-8

असिद्धकाण्ड-अष्टाध्यायी अध्याय 8/2-3

त्यादि के अनुसार सब शब्दों का अर्थ-द्रव्य

वार्तिकों का विशद व्याख्यान-महाभाष्य

पतञ्जलि के अनुसार तद्धितप्रिय लोग-दाक्षिणात्य

पातंजलयुग का प्रतिनिधि व्यक्ति-देवदत्त

प्राचीनमतावलम्बी-अपर: (म०भा०)

कई सूत्रों की द्विविधा व्याख्या-काशिका

महाभाष्यदीपिका-भर्तृहरि

महाभाष्यप्रदीप-कैय्यट

प्रदीपोद्योत-नागेश

स्पर्श वर्ण-25

उच्चारण स्थान-7

विकरण-10

अष्टाध्यायी पर प्रभाव-शाकटायन व्या० का०

उपधाविषयक सूत्र-अलोऽन्त्यात्पूर्व-उपधा

तिङ् प्रत्यय-18

निष्ठा-क्त-क्तवतु निष्ठा

पद-सुप्तिङ्न्तं पद

प्रातिपदिक-अर्थवदधातुरप्रत्यय: प्रातिपदिकम्

प्रातिपदिक-कृत्तद्धित समासाश्च

सवर्ण-तुल्यास्य प्रयत्नम् सवर्णम्

संहिता-पर: सन्निकर्ष: संहिता

संप्रसारण- इग्यण: संप्रसारणम्

लौकिक साहित्य

[लोकव्यवहार में लौकिक संस्कृत साहित्य का महत्वपूर्ण स्थान है। लौकिकसाहित्य का सारभूत तत्त्व रस है। इसमें रस का ही विस्तृत वृत्तान्त है]

उपजीव्य महाकाव्य-रामायण और महाभारत

अलंकृत महाकाव्य-रामायण

रामायण के काण्ड(बालादि)-7

काण्ड का भाग-सर्ग

रामायण के श्लोक-24000

परिशिष्ट काण्ड-7 वां

रामकथा-महाभारत में

शात्साहस्रीसंहिता-महाभारत

जीवन की समस्याओं के समाधान-शांतिपर्व में

पंचमवेद-महाभारत

दार्शनिक समस्याओं के समाधान-गीता

महाभारत के प्रणेता-कृष्णद्वैपायन अथवा वेदव्यास

आदिपर्व के अनुसार महाभारत की रचना-3 वर्ष में

महाभारत के विकास के चरण-3

जय के श्लोक-8800

भारत के श्लोक-24000

भारत के वक्ता-वैशम्पायन

भारत के श्रोता-जनमेजय

प्राचीन लोककथाओं के साहित्यिक संस्करण-उपाख्यान

महाभारत के दो पाठ-उत्तर-दक्षिण

महाभारत के पर्व(आदि से स्वर्गारोहण)-18

महाभारत पर्व के भाग-अध्याय

युद्ध का कारण-हस्तिनापुर सिंहासन

पाण्डव वनवासकाल-13 वर्ष

महाभारत युद्धावधि-18 दिन

महाभारत का प्रथमोल्लेख-आश्वलायन गृह्य-सूत्र

राजनीति-शांति पर्व में

अनेक नायकों वाला महाकाव्य-रघुवंश

रामायण का प्रधानरस-शांत

रामायण का प्रधान फल-पुरुषार्थचतुष्टय

महाभारत में न्यूनतम सर्ग-8

एक सर्ग में छंद-2

कालिदासकृत म० का० -2

कालिदासकृत प्रथम म० का० -कुमारसम्भव

कुमारसम्भव में कालीदासकृत सर्ग-8

कुमारसम्भव में बाद में जोड़े सर्ग-9

कुमारसम्भव में हिमालय वर्णन सर्ग-प्रथम

कुमारसम्भव में पार्वती प्रेमपरीक्षा सर्ग-पंचम

कुमारसम्भव में शिवपार्वतीगार्हस्थ्य सर्ग-8 वां

रघुवंश का दूसरा नाम-इक्ष्वाकु वंश

रघुवंश में इंदुमतीस्वयंवर-षष्ठ सर्ग में

राजा अग्निवर्ण का विलास वर्णन-19 वां(अंतिम)

कालीदासकृत महाकाव्य में रीति-वैदर्भी

क्रौंचवध की घटना-तमसा तट

रामायण का प्रक्षिप्तकाण्ड-7 वां

रामायण का अर्धप्रक्षिप्तकाण्ड-प्रथम

धीरोदात्त नायक-राम

रामायण में अंगीरस (आनन्दवर्धन)-करुण

महाभारत-इतिहास

अर्जुन का प्रपौत्र-जनमेजय

वैशम्पायन के गुरु-वेदव्यास

जय को सुनाया गया-नागयज्ञ के अवसर पर

सौति द्वारा नैमिषारण्य में सुनाए गए महाभारत के श्लोक-80000

हरिवंश पुराण के श्लोक-20000

महाभारत में लघुपर्व(अन्यथा-विभाजन)-100

महाभारत पर आधारित महाभारत काव्य-3(किरातादि)

महाभारत पर आधारित भासकृत नाटक-6

कालीदासकृत रचनाएं-7

ऋतुसंहार के सर्ग(ऋतुपरक)-6

मेघदूत का छंद-मंदाक्रांता

मेघदूत के पद्य-121

उत्तर मेघ में वर्णित-अलकापुरी

कुमारसम्भव पर मल्लिनाथ की टीका-8 सर्गों तक

सकंदोत्पत्ति प्रकरण का आधार-वनपर्व

बसन्त वर्णन-3 रे सर्ग में

रतिविलाप-चौथे सर्ग में

रघुवंश के नायक-29

अधिक बल-व्यञ्जना शक्ति पर

अधिक अलङ्कार-अर्थ(उपमादि)

मदनदाह-रघुवंश में

अश्वघोष का जन्मस्थान-साकेत

अश्वघोष की माता-स्वर्णाक्षी

अश्वघोष का आश्रयदाता-कनिष्क

अश्वघोष के महाकाव्य-2

अश्वघोष के विरुद (उपाधियां)-भदंत-महावादिन आदि

अश्वघोष की रचनाओं ka उल्लेख-इत्सिंग(चीनी यात्री) द्वारा

बुद्धचरित के मूलसर्ग-13

अमृतानन्द द्वारा जोड़े गए सर्ग-4(अंतिम)

सौन्दरनन्द में सर्ग-18

कनिष्क का वंश-कुषाण

कुमारदास-सिंहलराज

राजा भोज के पिता सिन्धुराज और नागकन्या शशिप्रभा का विवाह वर्णन-नवसाहसांक चरित में

वर्णन प्रधान पद्धति-अलंकृत-विचित्र

भारवि की एकमात्र रचना-किरातार्जुनीय

सर्ग (किरातार्जुनीय में)-18

आश्रयदाता(भारवि के)-दक्षिण के चालुक्य नरेश विष्णुवर्द्धन

किरातार्जुनीय की कथा का आधार-वनपर्व

शास्त्रकाव्य के संस्थापक-भट्टि(रावण वध के कर्ता)

माघ का निवासस्थान-श्रीमाल(गुजरात)

माघ के पिता-दत्तक

गुजरात के राजा वर्मलात के प्रधानमंत्री-सुप्रभदेव(माघ के पितामह)

शिशुपालवध महाकाव्य का वर्ण्यविषय - श्रीकृष्ण चरित्र

शिशुपालवध महाकाव्य की विशेषता-श्लेष तथा चित्र-काव्य

शिशुपाल-चेदिनरेश

शिशुपालवध में सर्ग-20

शिशुपालवध में श्री शब्द-प्रत्येक सर्ग के अंत में

किरातार्जुनीय में लक्ष्मी शब्द-प्रत्येक सर्ग के प्रारंभ में

दार्शनिक में कवि-श्रीहर्ष

कन्नौज के राजा विजयचंद्र और जयचंद के सभापंडित-श्रीहर्ष

श्रीहर्ष का परिचय-प्रत्येक सर्ग के अंत में

श्रीहर्ष के पिता-श्रीहरि

श्रीहर्ष की माता-मामल्लदेवी

नैषधीयचरित का कथानक-नलोपाख्यान (म०भा०)

जयचंद्र द्वारा कन्नौज का शासन-काशी से

नैषधीयचरित में सर्ग-22

नैषधीय चरित की विशेषता- शास्त्र काव्य

लघुत्रयी(सरलशैली)-रघुवंश, कुमारसम्भव, मेघदूत

बृहत्त्रयी के महाकवि-भारवि(किरात०), माघ(शिशुपालवध),श्रीहर्ष(नैषधीयचरित)

विश्व का सबसे बड़ा महाकाव्य-महाभारत

सबसे प्राचीन रसग्रन्थ-नाट्यशास्त्र(भरत)

रीति सिद्धांत-वामन

वक्रोक्ति सिद्धांत-आनन्दवर्द्धन

ध्वनि सिद्धांत-कुन्तक

औचित्य सिद्धांत-क्षेमेन्द्र

पउमचरिउ(रामकथा-विमलसूरि)

महाभारत में रामोपाख्यान-वनपर्व में

दो भाषाएं-आर्य-सामी (सीमेटिक)

संस्कृतं नाम दैवी वाक् -काव्यादर्श

बाल्मीकि रामायण की विशेषता-उदात्तता

अज विलाप-पत्नी के लिए

रति विलाप-पति के लिए

योगवासिष्ठ महारामायण श्लोक-27687

लघुयोग वासिष्ठ-गौडअभिनन्द

बृहत्पंचक-बृहत्त्रयी+रघुवंश और कुमारसम्भव

नैषधीयचरित में छंद-19

उपजाति(सर्वाधिक)-7 सर्गों में

17 वें सर्ग का छंद-अनुष्टुप

नैषधीयचरित पर टीकाएं-23

मल्लिनाथकृत टीका का नाम-जीवातु

नल-दमयन्ती का प्रथम मिलन-22 वें सर्ग में

13 वें सर्ग का 25 वां श्लोक-पंचनली

नल(नायक)-धीरोदात्त

नैषधीयचरित में विप्रलंभ श्रृंगार-17 वें सर्ग तक

दार्शनिक सर्ग-17 वां

विप्रलंभ सर्ग-4 था

अलङ्कृत शैली का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य कवि-श्रीहर्ष

दमयन्ती स्वयम्बर-सर्ग 11 से 14

कालिदास की पहली रचना-ऋतुसंहार

मेघदूत का छंद-मंदाक्रांता

एक व्यंजन वाला श्लोक(न)-भारवि

दण्डी की रचनाएं-3

पूर्वपीठिका में कुमार-2

ओष्ठयवर्ण रहित उच्छवास-7 वां

सुबंधु का गर्व-श्लेष

बाण का परिचय-हर्ष च० के आरम्भ में

बाण के पिता-चित्रभानु

बाण का ग्राम-प्रीतिकूट(शोणतट)

बाण की रचनाएं-2

हर्षचरित में उच्छवास-8

वंश परिचय में उच्छवास-आरम्भिक 2.5

कथाकाव्य-कादम्बरी

कादम्बरी के लेखक-2 (पिता-पुत्र)

कादम्बरी का नायक-चंद्रापीड़

तरुणों का मार्गदर्शक-मंत्री शुकनास

अम्बिकादत्त व्यासकृत शिवराज विजय-12 निःश्वास

पंचतंत्र में कथाएं-70

पंचतंत्र में श्लोक-900

हितोपदेश में पंचतंत्र की कथाएं-25

हितोपदेश में कुल कथाएं-43

नारायण पंडित के आश्रयदाता-बगराज धवलचंद्र

हितोपदेश में परिच्छेद-4

कल्हण के पिता-चम्पक

कल्हण के चाचा-कनक

राजतरंगिणी की रचना-3 वर्ष में

राजतरंगिणी में तरङ्ग-सबसे बड़ा तरङ्ग-8 वां

कश्मीर का प्रामाणिक इतिहास-ई० 813 से 1150 तक

पंचम वेद-नाटक

ऋग्वेद में संवाद मूलक सूक्त-15

रूपक के भेद-10

सामाजिक नाटक-प्रकरण

नायक भेद-4

मृच्छकटिक का चारुदत्त-धीरशान्त नायक

स्वप्नवासवदत्त का उदयन-धीरललित

वेणीसंहार का भीम-धीरोद्धत

हास्यपूर्ण रूपक-प्रहसन

संस्कृत नाटक के जनक-भास

भास के नाटक-13

रामायण पर आधारित नाटक-प्रतिमा-अभिषेक

कल्पित रूपक-अविमारक-चारुदत्त

उदयन से सम्बंधित रूपक-2

चारुदत्त में अंक-4

मृच्छकटिक का आधार-चारुदत्त

उज्जयिनी की क्रांति से सम्बंधित-मृच्छकटिक

मृच्छकटिक के अंक-10

चारुदत्त की पत्नी-धूता

शुंगवंशीय राजा-अग्निमित्र

मालविकाग्निमित्र के अंक-5

अग्निमित्र का पुत्र-वसुमित्र

विक्रमोर्वशीय का आधार-ऋग्वेद

बहती नदी को प्रेयसी समझना-अंक 4 (विक्रमो०)

अभिज्ञान शकुंतल में अंक-7

दुष्यंत का राज्य-हस्तिनापुर

शकुंतला की विदाई-अंक 4 में

बंगराज आदिशूर के द्वारा निमन्त्रित पंडित-भट्ट नारायण(कन्नौज से)

वेणीसंहार में अंक-6

दिङ्नागकृत कुंदमाला का आधार-रामायण

कुंदमाला में अंक-6

भवभूति का निवासस्थान-पदमपुर(विदर्भ)

भवभूति का दूसरा नाम-श्रीकंठ

महावीर चरित में रामकथा-विवाह से अभिषेक तक

महावीर चरित में अंक-7

रावण का मंत्री-माल्यवान

मालती माधव के अंक-10

घोरघण्ट(नाटक का पात्र)-कापालिक

उत्तररामचरित में अंक-7

शम्बूकवधस्थान-दंडकारण्य

छायादृश्य-अंक 3 में

लक्ष्मण का पुत्र-चन्द्रकेतु

गर्भनाटक-7 वें अंक में

भवभूति के 3 नाटक-जीवन के प्रतीक

दिंगनाग का निवासस्थान-दक्षिण

यशोवर्मन(कन्नौज)के राजकवि-भवभूति

भवभूति के पिता-नीलकंठ

प्रियदर्शिका और रत्नावली का आधार-उदयनोपाख्यान

बौद्ध सिद्धांत पर आधारित-नागानन्द

बाण और मयूर का आश्रयदाता-हर्षवर्द्धन

हर्षकालीन चीनी यात्री-ह्वेनसांग

दोनों नाटिकाओं के अङ्क-4-4

दोनों नाटिकाओं की नायिकाएं-पृथक-पृथक

रत्नावली की नायिका-सागरिका

प्रियदर्शिका का संशोधित रूप-रत्नावली

नाट्यसंविधान की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण-रत्नावली

नागानन्द का आदर्श-महायान सम्प्रदाय(बौद्ध)

रत्नाकर का महाकाव्य-हर विजय

एक नायक वाला इतिहास-परिक्रिया(रामायण)

भारत का प्रथम इतिहास-महाभारत

अनहिलवाड का चालुक्य राजा-कुमारपाल

भामिनी विलास का लेखक-पं० राज जगन्नाथ

बासवदत्ता का नायक-कंदर्पकेतु

हर्षवर्द्धन का राजकवि-बाणभट्ट

हर्षचरित-आख्यायिका

बेतालपंचविंशतिका का आधार-बृहत्कथामन्जरी

त्रिविक्रमभट्ट के चम्पूकाव्य-2

महाभारत पर आधारित भास के नाटक-9

चारुदत्त का लेखक-भास

कादम्बरी की कथा-काल्पनिक

दर्शन साहित्य

(वेद का अर्थ ज्ञान है। ज्ञान के बिना मुक्ति अथवा ईश्वर की प्राप्ति नहीं होती। वेद के समस्त विषयों की समीक्षा दर्शनशास्त्र के अंतर्गत की गई है। एक प्रकार से वेद का सारभूत तत्त्व दर्शनशास्त्र है)

गीता में सांख्ययोगाध्याय-2

गीता में कर्मयोगाध्याय-3

गीता में विभूति योगाध्याय-10

गीता में विश्वरूपदर्शन योगाध्याय-11

गीता में भक्ति योगाध्याय-12

गीता में गुणत्रय विभाग योगाध्याय-14

गीता की श्लोक संख्या-700 (व०उ०)

प्रकृतियां-2(परापरा)

गीता में आत्मा का वर्णन-अ० 2

गीता में ब्रह्म का वर्णन-अ० 8 एवं 13

योगत्रयी-कर्म, ज्ञान एवं भक्ति

स्थितप्रज्ञ के लक्षण-अध्याय 2

गुणातीत पुरुष के लक्षण-अध्याय 14

चतुःसूत्री योग-कर्म

चार्वाक दर्शन का दूसरा नाम-लोकायत

बार्हस्पत्यसूत्र संख्या-20

मूल जैनधर्म के सिद्धांतों की भाषा-अर्धमागधी

जैन सिद्धांत ग्रन्थों की संख्या-प्रायः 45

तत्त्वार्थसूत्रकार-उमास्वाति

जैनधर्मानुसार मोक्ष के साधन-सप्तभंगी न्याय, स्याद्वाद

महात्मा बुद्ध के उपदेशों की भाषा-पालि

बौद्ध धर्म के मूलग्रन्थ-त्रिपिटक

महायान के ग्रन्थों की भाषा-संस्कृत

बौद्धसम्प्रदाय-4(वैभाषिकादि)

जो जगत के समस्त पदार्थों को शून्य मानता है(शून्यवाद)-माध्यमिक सं०प्र०

विज्ञानवाद के प्रवर्तक आचार्य-मैत्रेय

प्रमुख शून्यवादी आचार्य-नागार्जुन आर्यदेव शान्तरक्षित

प्राचीन न्याय के अनुसार पदार्थ-16(गौतम)

तत्त्वचिंतामणि(नव्यन्याय)-गंगेश उपाध्याय

नव्यन्याय का स्वर्णयुग-17 वीं शती

तत्त्वचिंतामणि पर दीधिति टीका-रघुनाथ शिरोमणि

अर्द्ध वैनाशिक (कणाद)-वैशेषिक दर्शन

'उपस्कार' के कर्ता-शंकरमिश्र

सांख्यसिद्धान्तपरक उपनिषद-कठ, छान्दोग्य, श्वेताश्वतर और मैत्री

सांख्यमत-द्वैतवाद

संख्यानुसार मूलतत्त्व-(प्र०पु०)

संख्यानुसार सिद्धांत-सत्कार्यवाद

संख्यानुसार तत्त्व-25

सांख्य के उद्भावक-कपिल

सांख्यकारिका-ईश्वरकृष्ण

तत्त्वकौमुदी-वाचस्पति मिश्र

राजमार्तण्ड वृत्ति-भोज

मीमांसा का सिद्धांत-अपूर्व (पुण्यापुण्य)

मीमांसानुसार शब्द-नित्य

कुमारिल का सिद्धांत-अभिहितान्वयवाद

प्रभाकर का सिद्धांत-अन्विताभिधानवाद

दर्शनों में सर्वाधिक सूत्र-मीमांसा

भाट्टमत के प्रवर्तक(शां०भा०टीका)-कुमारिल

गुरुमत के प्रवर्तक-प्रभाकर मिश्र

तृतीय: पन्थाः-मुरारि

मीमांसाकार-जैमिनी

माधव(सायणाग्रज)का मत-भाट्ट

ब्रह्मसूत्र(बादरायण)-550

अद्वैतवाद का सर्वप्रथम आलोचक-भास्कर(भेदाभेदवादी)

अद्वैतवाद में जीवेश्वर विषयक मत-5

विशिष्टाद्वैत-रामानुज

द्वैताद्वैत-निम्बार्क

द्वैत-माधव

शुद्धाद्वैत-वल्लभ

अचिंत्यभेदाभेद-चैतन्य(बलदेव विद्याभूषण)

शांकर मायावाद-माण्डूक्य कारिका(गौड़पाद की)

सत्ता के तीन प्रकार-पार०, व्या०, प्राति०

वार्तिककार सूरेश्वर के भाष्य (उप०)-तैत्तिरीय, बृहदारण्यकोपनिषद

पद्मपाद कृत टीका-चतुःसूत्री पर 'पंचपादिका'

विवरणप्रमेय संग्रह-विद्यारण्य

पद्यात्मक टीका(संक्षेप शारीरक)-सर्वज्ञात्म मुनि

भामती टीका(शांकर भाष्य पर)-वाचस्पति मिश्र

पंचदशी-विद्यारण्य

प्रस्थानत्रयी पर भाष्यकर्ता-मध्व

अणु भाष्य के कर्ता (2)-वल्लभ एवं पुत्र

योगवासिष्ठ के कर्ता-वसिष्ठ

वैदिक दर्शन-6

अवैदिक दर्शन-3

क्षणिक विज्ञानवादी-बौद्धदर्शन

आर्य सत्य-4(दुखादि)

शील-5

दर्शन युग्म-3

योगवार्तिक-विज्ञानभिक्षु

मीमांसकों का ईश्वर-कर्म

श्लोकवार्तिक-कुमारिल भट्ट

उत्तरमीमांसा-वेदांत

पदार्थविद्या-वैशेषिक

वैशेषिकसूत्रों पर प्राचीनतम भाष्य-रावण

वैशेषिकसूत्रों पर अन्य भाष्य-चंद्रकांत कृत

न्यायसूत्रकार का मुख्यनाम-मेधातिथि

न्यायसूत्र पर भाष्य-वात्स्यायन

तात्पर्य टीका(न्या०वा०)-वाचस्पति मिश्र

न्यायकुसुमांजलि-उदयन

नव्यन्याय के पिता-गंगेशोपाध्याय

न्यायदर्शन का प्रथम सोपान-तर्कसंग्रह

सर्वशास्त्रोपकारक दर्शन-न्याय

पदार्थों की संख्या-7

कर्म की संख्या-5

कारण की संख्या-5

हेत्वाभास की संख्या-5

तर्कदीपिका टीका-अन्नंभट्ट

यथार्थानुभव के भेद-4

सन्निकर्ष-6

अवयव-5

सव्यभिचारहेत्वाभास-3

असिद्ध हेत्वाभास-3

वाक्यार्थज्ञान में हेतु-3

अयथार्थानुभव के भेद-3

स्मृति के भेद-2

संस्कार-3

अभाव-4

जैन दर्शन की प्रथम संस्कृत रचना-तत्त्वार्थाधिगमसूत्र(उमास्वाति)

उपनिषदों का फारसी में अनुवादक-दाराशिकोह

शैवदर्शनपरक उपनिषद-श्वेताश्वतर

दर्शनकोष-छान्दोग्योपनिषद

काल तालिका

(कौन ऋषि अथवा कवि कब हुआ, और उसने क्या लिखा? इसकी आवश्यकता अध्येता को पग-पग पर पड़ती है। कौन पहले हुआ, कौन बाद में। यह भी कदाचित जानना आवश्यक हो जाता है)

प्रमुख रचनाकार/रचना-काल

ऋग्वेद-2000 ईस्वी पूर्व

वेदाङ्ग-800 ईस्वी पूर्व

यास्क/निरुक्त-800 ईस्वी पूर्व

पिंगल/छंदःसूत्र-800 ईस्वी पूर्व

कपिल/सांख्यसूत्र-700 ईस्वी पूर्व

जैमिनी/मीमांसासूत्र-600 ईस्वी पूर्व

कणाद/वैशेषिकसूत्र-500 ईस्वी पूर्व

पाणिनि/ अष्टाध्यायी-500 ईस्वी पूर्व

बाल्मीकि/रामायण-500 ईस्वी पूर्व

व्यास/महाभारत-400 ईस्वी पूर्व

कौटिल्य/अर्थशास्त्र-400 ईस्वी पूर्व

बादरायण/ब्रह्मसूत्र-300 ईस्वी पूर्व

पतञ्जलि/योगसूत्र-185 ईस्वी पूर्व

भास/स्वप्नवासवदत्तम्-200 ईस्वी पूर्व

कालिदास/अभिज्ञान शाकुंतलम्-100 ईस्वी पूर्व

अश्वघोष/बुद्धचरित-ईस्वी 1

विष्णुशर्मा/पंचतंत्र-ईस्वी 2

शूद्रक/मृच्छकटिक-ईस्वी 3

ईश्वरकृष्ण/सांख्यकारिका-ईस्वी 4

दण्डी/दशकुमारचरित-ईस्वी 6

भारवि/किरातार्जुनीय-ईस्वी 6

माघ/शिशुपालवध-ईस्वी 7

शंकराचार्य/शांकर भाष्य-ईस्वी 7

बाणभट्ट/कादम्बरी-ईस्वी 7

सुबन्धु/वासवदत्ता-ईस्वी 7

भर्तृहरि/नीतिशतक-ईस्वी 7

हर्ष/नागानन्द-ईस्वी 7

भवभूति/उत्तर रा०च०-ईस्वी 7

वाचस्पति मिश्र/तात्पर्यटीका-ईस्वी- 9

रामानुज/श्रीभाष्य- ईस्वी 11

भोज/रामायणचम्पू-ईस्वी 11

मम्मट/काव्यप्रकाश-ईस्वी 12

कल्हण/राजतरंगिणी-ईस्वी 1148

श्रीहर्ष/नैषधीयचरित-ईस्वी 12

नारायण पंडित/हितोपदेश-ईस्वी 14

विश्वनाथ/साहित्यदर्पण-ईस्वी 14

केदार भट्ट/वृत्तरत्नाकर-ईस्वी 15

भट्टोजिदीक्षित/सिद्धांतकौमुदी-ईस्वी 16

अन्नं भट्ट/त० सं० -ईस्वी 17

जगन्नाथ/रसगंगाधर-ईस्वी 17

अम्बिकादत्त व्यास/शिव०वि०-ईस्वी 1858

परिशिष्ट

संस्कृत भाषा का परिवार-भारोपीय

आर्य भाषाओं की जननी-संस्कृत

मराठी की जननी-महाराष्ट्री अपभ्रंश

हिंदी-शौरसेनी

भोजपुरी, मैथिली, मगही, बंगाल, उड़िया और असमिया की जननी-मागधी

पूर्वोत्तर प्रदेश की बोलियों की जननी-अर्द्धमागधी

सृष्टि प्रक्रिया सम्बन्धी सूक्त-पुरुषसूक्त

सृष्टि रहस्य सम्बन्धी सूक्त-नासदीय

अथर्ववेद में कुल मन्त्र-6000

मुख्य उपनिषद-12

महाभारत की कथा-कौरव पांडवोत्पत्ति एवं उनका स्वर्गगमन

पुराणों का विषय-वैदिक प्रतीक एवं प्राचीन घटनाओं का वर्णन

पुराणों एवं उपपुराणों की संख्या- 18-18

महाकाव्यों के विकासक्रम में महाकवियों का स्थान क्रमशः-कालिदास-अश्व घोष-भारवि-माघ

भट्टिकाव्य का दूसरा नाम-रावणवध(सर्ग 22)

वाक्पतिराज के गौडवहो का विषय-कन्नौज के यशोवर्मन की विजय का वर्णन

संस्कृत का पहला ऐतिहासिक महाकाव्य-नवसाहसांक चरित (पद्मगुप्त)

मालवा नरेश सिन्धु राज का इतिहास-नवसाहसांक चरित (पद्मगुप्त)

चालुक्य नरेश विक्रमादित्य षष्ठ की प्रशंसा-विक्रमांकदेवचरित (विह्लण)

राजतरंगिणी का आरम्भिक वर्णन-राजा गोनन्द(13 वीं शती)

बंगाल के राजा लक्ष्मण सिंह का सभासद-जयदेव

अमरुक शतक का सर्वप्रथम उल्लेख-आनन्दवर्धन(850 ईस्वी)

शिवमहिम्न: स्तोत्र का छंद-शिखरिणी

मयूरभट्ट के सूर्यशतक का छन्द-स्रग्धरा

गाथा शप्तशती-हाल

आर्यासप्तशती-गोवर्धनाचार्य

आर्यासप्तशती का चमत्कार-श्लेष

अम्बिकादत्त का कार्यक्षेत्र-बिहार

गुणाढ्य की बृहत्कथा की भाषा-पैशाची

बृहत्कथा का संक्षिप्त रूपांतर-बृहत्कथाश्लोक-संग्रह(वुधस्वामी)

बृहत्कथा का सबसे बड़ा संस्कृत संस्करण-कथासरित्सागर(सोमदेव)

शुकसप्तति का विषय-स्त्री को भ्रष्टाचार से बचाना

राष्ट्रकूट के राजा इन्द्रराज के द्वारा संरक्षित-त्रिविक्रमभट्ट

यशस्तिलक चम्पू का आधार-उत्तर पुराण(गुण भद्र)

प्रतिष्ठानराज मलयवाहन और नागराजकुमारी उदयसुन्दरी का विवाह-उदयसुन्दरी कथा(सोड्ढल)

एक ही रामायण चम्पू के 3 लेखक क्रमशः-भोज, लक्ष्मणभट्ट, वेंकटराज

नाटक के पर्यायवाची शब्द-नाट्य एवं रूपक

भरतनाट्यशास्त्र के अनुसार नाटक की उत्पत्ति-ब्रह्मा से

जीमूतवाहन का आत्मत्याग(कथा)-नागानन्द

मालतीमाधव का प्रकार-प्रकरण

राम की राज्याभिषेक तक की कथा-महावीरचरित

प्रतीकात्मक नाटक-प्रबोधचंद्रोदय(कृष्णमिश्र)

वैदिक शब्दों का कोष-निघण्टु

अभिधानरत्नमाला के लेखक-हलायुध

वाचस्पत्य के लेखक-तारानाथ

शब्दकल्पद्रुम के लेखक ज़-राधाकांतदेव

छंदों के पद्यबद्ध लक्षणोदाहरण-सुवृत्ततिलक

प्रति पद्य में दोनों साथ-2-(क्षेमेन्द्र)

मनुस्मृति में अध्याय-12

राजनीति पर प्राचीन ग्रन्थ-कौटिल्य का अर्थशास्त्र

व्यावहारिक नीति ग्रन्थ-चाणक्य नीति दर्पण

चरक संहिता में खंड एवं अध्याय-8-30

वराहमिहिर की प्रमुख रचनाएं-पंचसिद्धांतिका, बृहत्संहिता, बृहज्जातक

चार्वाकदर्शन के संस्थापक-बृहस्पति

काव्यशास्त्र का प्राचीनतम ग्रन्थ-नाट्यशास्त्र(भरत मुनि)

'विवादार्णव सेतु' का विषय-भारतीय पारिवारिक कानून

एशियाटिक सोसाइटी के स्थापक-विलियम जोन्स

नेपोलियन द्वारा फ्रांस में बंदी-एलेग्जेंडर

बनाया गया संस्कृतज्ञ-हेमिल्टन

हेमिल्टन का शिष्य-श्लेगेल(जर्मन)

रामायण का प्रथम जर्मन अनुवादक-श्लेगेल

संस्कृत का प्रथम फ्रेंच विद्वान-शेजी

श्लेगेल का संस्कृतवेत्ता भाई-बान श्लेगेल(शेजी का शिष्य)

पालि साहित्य के प्रथम विदेशी विद्वान-बरनुफ(यूजीन)

संस्कृत साहित्य के इतिहास के प्रथम लेखक-एब्रेच्ट वेबर

'पयोधरोत्सेध निपातचूर्णिता:' आदि श्लोक किस ग्रन्थ का है?-कुमारसम्भव

'वहन्ति वर्षन्ति नदन्ति भान्ति' आदि श्लोक किस ग्रन्थ का है?- बाल्मीकि रामायण

'संचारिणी दीपशिखेव रात्री' आदि श्लोक किस ग्रन्थ का है?-रघुवंश

'क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति तदेव रूपं रमणीयताया:' आदि श्लोक किस कवि का है?- माघ (महाकवि:)

'वागर्थाविव संपृक्तौ' आदि श्लोक किस ग्रन्थ का है?-रघुवंश(मंगलाचरण)

'शुश्रूशस्व गुरून् कुरु प्रिय सखी' आदि श्लोक किस ग्रन्थ का है?-अभिज्ञान शाकुंतल

'यास्यत्यद्य शकुन्तलेति' आदि श्लोक किस ग्रन्थ का है?-अभिज्ञान शाकुंतल

'अर्थो हि कन्या परकीय एव' आदि श्लोक किस ग्रन्थ का है?- अभिज्ञान शाकुंतल

'असत्युत्तरस्यां दिशिदेवतात्मा' आदि श्लोक किस ग्रन्थ का है?-कुमारसम्भव

'भवन्ति नम्रास्तरव: फलोद्गमै:' आदि श्लोक किस ग्रन्थ का है?-अभिज्ञान शाकुंतल

'स्फुटता न पदैरपाकृता' आदि श्लोक किस ग्रन्थ का है?-किरातार्जुनीय

'न नोन नुन्नो नुन्नो नो' आदि श्लोक किस ग्रन्थ का है?-किरातार्जुनीय

'सहसा विदधीत न क्रियाम्' आदि श्लोक किस ग्रन्थ का है?-किरातार्जुनीय

'नारिकेलफलसम्मितं वचो भारवे:' आदि श्लोक किस ग्रन्थ का है?-मल्लिनाथ(टीकाकार)

'मधुरया मधुबोधित माधवी' आदि श्लोक किस ग्रन्थ का है?-शिशुपालवध(माघ)

'मदेकपुत्रा जननी जरातुरा' आदि श्लोक किस ग्रन्थ का है?-नैषध(श्रीहर्ष)

'खगा वासोपेता: सलिलमवगाढ़ो' आदि श्लोक किस ग्रन्थ का है?-स्वप्नवासवदत्त(भास)

'स्नेहं दयां च सौख्यं च' आदि श्लोक किस ग्रन्थ का है?-उत्तररामचरित

'एको रस: करुण एव' आदि श्लोक किस ग्रन्थ का है?-भवभूति:

,'वासन्तं कुसुमम् फलं च युगपद्' आदि श्लोक किस ग्रन्थ का है?-गेटे(शाकुंतल विषयक)

'स्वप्नवासवदत्तस्य दाहकोS भून्नपावक:' आदि श्लोक किस ग्रन्थ का है?-राजशेखर

'कवीनामगलद्दर्पो नूनम् वासवदत्तया' आदि श्लोक किस ग्रन्थ का है?-वाग्भट्ट (म०कौ०)

'नवोS र्थो जातिरग्राम्या' आदि श्लोक किस ग्रन्थ का है?- बाण के विषय में

एक वर्ण से हीन छंद -निन्रित्

एक वर्ण से अधिक छंद -भुरिक

वेद में तुमुन् अर्थ वाले प्रत्यय-15

शतपथब्राह्मण का एक भाग-बृहदारण्यकोपनिषद

प्रधान प्रस्थान(वेद प्रस्थान)-उपनिषद

न्याय प्रस्थान-ब्रह्मसूत्र

स्मृति प्रस्थान-गीता

ब्रह्मसूत्र के अध्याय पाद-4-16

पातन्जलयोगसूत्र-195

ब्रह्मसूत्र पर श्रीभाष्य-रामानुज

पंचदशी के लेखक-विद्यारण्य

तर्कभाषा पर टीकाएं-25

24 वां तीर्थंकर-महावीर

वैराग्य k समय बुद्ध की आयु-28

मीमांसासूत्र-2643

वेदांतसूत्र-555

ब्रह्म और जीव की एकता-अद्वैत

बुद्ध के गुरु-आडार कलाम

सांख्य के खंडक वेदांत सूत्र-60

कन्दर्पकेलि-प्रहसन

नाटकों में अप्रयुक्त-पैशाची

जेंद अवेस्ता में इंद्र शब्द-2 बार

सप्तसिंधु का राजा-वृत्र

परिवार से संबंधित-शाखा

ऋग्वेद में वर्णित नहीं-कमल, चीता, पुनर्जन्म और अंजीर

दाशराज युद्ध के नायक-विश्वामित्र, वसिष्ठ और भृगु

दाशराज युद्ध के विजेता-सुदास

पहले मण्डल में अवर्णित-चावल

उरुगाम शब्द का प्रयोग-121 बार

उरुन्जीरा-सरस्वती

इंद्र का मित्र-सुदास

अनार्यों के ध्वस्त नगर-99

सर्वाधिक वर्णित धातु-स्वर्ण

नदीसूक्त(21 नदियां)-10.75(ऋग्वेद)

इंद्र-वृत्र के युद्ध का इतिहास-निरुक्त में

दाशराज युद्धक्षेत्र-परुवणी(रावी)

सुदास का पिता-दिवोदास

युद्ध में भाग न लेने वाला-पुरु(ययाति पुत्र)

कण्व का वंश-पुरु

अगस्त्य की पत्नी-लोपामुद्रा

प्रथम मण्डल में अनुक्त नदियां-गंगा-यमुना

असिक्नि-चन्द्रभागा(हिमाचल प्रदेश)

चारों चरणों में बराबर अक्षर वाले छंद-समवृत्त

यगण का चिह्न-। S S

अनुष्टुप छंद में अक्षर-32(समवृत्त)

इन्द्रवज्रा में तगण-2 (समवृत्त) (अक्षर 11)

उपेन्द्रवज्रा में तगण- 2 (समवृत्त) (अक्षर 11)

उपजाति में तगण- 3 (समवृत्त) (अक्षर 11)

12 अक्षर वाला समवृत्त-वंशस्थ

14 अक्षर वाला समवृत्त- बसन्ततिलका

17 अक्षर वाला समवृत्त- शिखरिणी

19 अक्षर वाला समवृत्त- शार्दूलविक्रीडित

असमानार्थक पदों की आवृत्ति-यमक(अलङ्कार)

अनेकार्थक पद या पद समूह- श्लेष (अलङ्कार)

दो भिन्न वस्तुओं का साधर्म्य-उपमा (अलङ्कार)

उपमान और उपमेय की अभिन्नता- रूपक (अलङ्कार)

उपमेय में उपमान की संभावना- उत्प्रेक्षा (अलङ्कार)

मुख्यार्थ समर्थक अन्य वाक्य-अर्थान्तरन्यास

राजशेखर कृत नाटक-4

गौडवहो की भाषा-महाराष्ट्री प्राकृत

कुमारपालचरित-हेमचन्द्र(जैन)

भर्तृहरिकृत शतक-3

पंडित जगन्नाथ कृत लहरीग्रन्थ-5

प्रथम गद्य-कृष्णयजुर्वेद

अलङ्कृत गद्य शैली(शिलालेख)-गिरनार(ईस्वी 150)

आधुनिक गद्यकार-पंडित हृषिकेश, भट्टाचार्य, पंडिता क्ष्माराव

रामायण चम्पू-भोजराज

उत्तर चम्पू-वेंकटाध्वरि

राजशेखरकृत बालभारत का उपजीव्य-महाभारत

भौतिकवादी दर्शन-चार्वाक

द्वैतवादी दर्शन-सांख्ययोग

व्यवहारवादी-बौद्ध

बहुवादी-जैन, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा

जैन दर्शन के मूल तत्त्व-7

न्याय वैशेषिक दर्शन के मूल तत्त्व-सप्तपदार्थ

अद्वैतवाद का मूल तत्त्व-निर्गुण ब्रह्म

पुराना आख्यान-पुराण

पुराणों के पाँच विषय-सृष्टि, सृष्टि का लय, सृष्टि की आदि वंशावली, मन्वन्तरवर्णन तथा सूर्य चंद्रवंश का वर्णन

भारतीय ज्ञान का कोष-अग्निपुराण

पुराणों की शैली-अतिशयोक्ति-अलङ्कार से पूर्ण

दक्षिण के आंध्र राजाओं का इतिहास-मत्स्यपुराण

पुराणों की रचना-गुप्तकाल तक

वेदोक्त धर्म का सरल वर्णन-पुराण

काशीतीर्थ का वर्णन-स्कन्द पुराण

पुराणों के व्याख्याता-सूत लोमहर्षण

सूत-पौराणिक ब्राह्मण(अग्निपुराण)

पुराण संख्या-18

विष्णुपुराण की श्लोक संख्या-23000

शिवपुराण की श्लोक संख्या-24000

श्रीमद्भागवत पुराण की श्लोक संख्या-18000

श्रीमार्कण्डेय पुराण की श्लोक संख्या-9000

अग्नि पुराण की श्लोक संख्या-10500

स्कंद पुराण की श्लोक संख्या-81100

गरुड़ पुराण की श्लोक संख्या-19000

उपपुराणों की संख्या-20

दार्शनिक महत्त्व का पुराण-श्रीमद्भागवत

वैष्णवदर्शन ka मूल-विष्णुपुराण

भक्तिशास्त्र का सर्वस्व-श्रीमद्भागवत पुराण

वल्लभाचार्य के अनुसार व्यास की समाधिभाषा-श्रीमद्भागवत

भागवत की विशेषता-भगवान को पाने का सरल उपाय बताना

प्रेमाभक्ति का वर्णन-रासपंचाध्यायी(भागवत)

सर्ववेदांतसार-भागवत

मदालसा का जीवनचरित्र-मार्कण्डेय पुराण

मार्कण्डेय पुराण का विशेषांश-दुर्गासप्तशती

अग्निपुराण का कथ्य(प्रमुख)-अवतार, मन्दिर निर्माण, मूर्तिप्रतिष्ठा, ज्योतिष, राजनीति, धर्मशास्त्र, आयुर्वेद, छन्द, अलंकार, व्याकरण, कोष, योग और गीता का सारांश

शंकर के 28 अवतारों का वर्णन-लिङ्गपुराण(श्लोक 11000)

वराहावतार वर्णन-वराहपुराण

मथुरा माहात्म्य-वराहपुराण

कार्तिकेय द्वारा शैवतत्त्वों का निरूपण-स्कन्द पुराण

विष्णु और शिव का एकत्र वर्णन-वामनपुराण(श्लोक 10000)

कूर्मपुराण के उपलब्ध श्लोक-6000

भृगु और अंगिरादि ऋषियों का वर्णन तथा प्रतिमाशास्त्र-मत्स्यपुराण

विष्णु द्वारा गरुड़ को विश्व की सृष्टि बताना-गरुड़पुराण

समस्त ब्रह्मांड का वर्णन-ब्रह्मांड पुराण

जीवनरक्षक ज्ञान-आयुर्वेद

आयुर्वेद के उपदेशक-धन्वन्तरि

आयुर्वेद की बृहत्त्रयी-चरक, सुश्रुत, एवं वाग्भट्ट संहिताएँ

चरक की प्रधान विशेषता-चिकित्सा का प्रतिपादन

संगीतशास्त्र का प्रथम ग्रन्थ-नाट्यशास्त्र(भरतमुनि)

जो स्वर समूह श्रोता के चित्त का विशेष अनुरंजन करता है-राग(संगीत)

वेद के अनन्तर धर्ममीमांसा के विषय में सर्वाधिक प्रामाणिक ग्रन्थ-स्मृति

षोडशसंस्कारों का वर्णन-स्मृतियों में

भारतीय कानून का विवेचन-मनु, याज्ञवल्क्य, और नारदकृत स्मृतियां

बंगाल के दायभाग सम्बन्धी कानून का आधार-जीमूतवाहन कृत ग्रन्थ

सर्वोत्तम स्मृति-मनुकृत

वेदों में मनु-मनुष्य जाति के पिता

मनुस्मृति में अध्याय-12

मनुस्मृति में श्लोक-2694

कर्म, उपासना, और ज्ञान के साधनभूत उपायों को सिखलाने वाला-तन्त्र(आगम)

निगम(कर्म, उपासना, और ज्ञान)-वेद

तिब्बत का राजधर्म-बौद्ध

तिब्बती अनुवादों की विशेषता-संस्कृत ग्रन्थों का अक्षरशः अनुवाद

तिब्बती बौद्ध धर्म के अध्येता-राहुल सांकृत्यायन

तिब्बत में बौद्धधर्म का प्रवेश-नेपाल से(छठी शती)

तिब्बत के राजा के द्वारा आमंत्रित भारतीय दार्शनिक-शान्तरक्षित(नालन्दा बिहार से व 763 ईस्वी में)

तिब्बत द्वारा आमंत्रित अन्य विद्वान-दीपंकर श्रीज्ञान(1042 ईस्वी)

तिब्बत के प्रसिद्ध ग्रन्थकार एवं अनुवादक-वुस्तोन(14 वीं शती)

'भारत में बौद्धधर्म का इतिहास' के लेखक-लाला तारानाथ(सन् 1375)

शरणागत देश तिब्बत का निवास-धर्मशाला(हिमाचल प्रदेश)

तिब्बत पर अधिकार जताने वाला देश-चीन(साम्यवादी)

तिब्बत की एकमात्र प्रतिनिधि हिंदी पत्रिका-तिब्बत बुलेटिन

गणक तरंगिणी के लेखक-सुधाकर द्विवेदी(ज्योतिष)

भारतीय ज्योतिष का इतिहास-डॉ० गोरख प्रसाद(लेखक)

पंचपल्लव(पूजाकर्म में वांछित)-अश्वत्थ, उदुम्बर, प्लक्ष, न्यग्रोध, आम्र

पंचरत्न-स्वर्ण, रजत, मुक्ता, लाजावर्त, प्रवाल

पंचामृत-दूध, दही, घी, शहद, शक्कर

पूजाकर्म में वांछित द्रव्य- यग्योपवीत, अनाज, कपूर, गुलाली, धूप, दीप, फूल, कुशा, गंगाजल, तुलसी, दूब, नारियल, सुपारी, ऋतुफल, कलश, थाली, दो जलपात्र, तष्टा, आचमनी, अर्घा, गुड़, बड़े पत्ते 10, मौली, सरसों के दाने, चावल, देव प्रतिमा आदि

ग्रह-9

नक्षत्र-27

राशियां-12

भाव-12

स्वभाव से सौम्य ग्रह-चन्द्र, बुध, बृहस्पति, शुक्र

स्वभाव से क्रूर ग्रह-सूर्य, मंगल, शनि, राहु, केतु

जिन भावों में क्रूर ग्रह अशुभ फलकारी होते हैं-1,2,4,5,7,8,9,12

परस्पर मित्र ग्रह-सूर्य, चन्द्र, मंगल, बृहस्पति

परस्पर शत्रु ग्रह-बुध, राहु, शनि, शुक्र

किसी भी ग्रह की पूर्ण दृष्टि-सप्तम भाव पर

कालविधायक शास्त्र-ज्योतिष

ज्योतिष का ज्ञाता-यज्ञ का ज्ञाता

ज्योतिष की 3 शाखाएं-सिद्धांत, संहिता और होरा

गणित द्वारा ग्रहों की शाखाएं-सिद्धांत

आकाशीय स्थिति का निर्धारण तन्त्र(सिद्धांत)-युगादि के काल-गणना करके ग्रहों का आनयन

किसी नियत शकवर्ष से ग्रहों का साधन-करण

सिद्धांत ग्रन्थ-सूर्यसिद्धांतादि

तन्त्रग्रन्थ-आर्यभट्टीयादि

करण ग्रन्थ-केतकीग्रहगणितादि

ग्रहों की तात्कालिक स्थिति से सुभिक्ष, दुर्भिक्ष आदि का पूरे राष्ट्र के लिए निर्देश-संहिता स्कन्ध

संहिता स्कन्ध का प्रमुख ग्रन्थ-वृहत्संहिता(वराहमिहिर)

होरा शब्द का मूल-अहोरात्र

होरा का आधुनिक नाम-जातक

प्राणी के जन्मकालिक ग्रहों की स्थिति से उसके जीवन की घटनाओं का पता लगाना-जातक या होरा

किसी मनुष्य के वर्ष प्रवेश कालिक ग्रहस्थिति से वर्ष भर का शुभाशुभ फल बताना-ताजिकशास्त्र

होरा और मुहूर्त का सम्मिलित रूप-फलित ज्योतिष

वराहमिहिर की प्रमुख रचनाएं-बृहज्जातक, लघुजातक, पंचसिद्धांतिका

भट्टोत्पल की व्याख्या-बृहज्जातक एवं लघुजातक पर

युद्ध में सफलता के प्रतिपादक मुहूर्त-बृहदयात्रा (वराहमिहिर)

वाराही संहिता-बृहत्संहिता

प्राचीन भारत के ज्ञानविज्ञान का विश्वकोश-बृहत्संहिता

संहिता स्कन्ध का एकमात्र उपलब्ध ग्रन्थ-बृहत्संहिता

बृहत्संहिता में अध्याय-106

बृहत्संहिता के अनुसार ज्योतिषी-देश की आँख

भूमि के अंदर जल का पता लगाने वाली विद्या-दर्कागल(बृहत्संहिता)

वराहमिहिर का जन्म स्थान-उज्जयिनी

वराहमिहिर के पिता का नाम-आदित्यदास

वराहमिहिर का जन्मकाल-छठी शती

यवन ज्योतिषियों की प्रशंसा-बृहज्जातक

वराहमिहिर का पुत्र-पृथुयश

पृथुयश की रचना-षट्पंचाशिका

षट्पंचाशिका पर वृत्ति-भट्टोत्पल

पाराशरी के2 2 संस्करण-लघु एवं बृहत्

लघुपाराशरी का दूसरा नाम-उडुदायप्रदीप

जैमिनीसूत्र में अध्याय-4

मुहूर्त चिंतामणि के लेखक-रामभट्ट

मुहूर्त चिंतामणि पर टीका-प्रमिताक्षरा(रामभट्ट)

मुहूर्त चिंतामणि पर टीका-पीयूषधारा(रामभट्ट के भ्रातृज गोविंद)

ताजिकनीलकंठी के लेखक-नीलकण्ठ(अनन्त के पुत्र)

ताजिक का संस्कृत नाम-वर्षतन्त्र

अकबर के दरबार के प्रधान पंडित-नीलकंठ

टोडरानन्द के कर्ता-नीलकंठ

रामभट्ट के पिता का नाम-अनन्त

प्रमुख ग्रंथों के स्मरणीय श्लोक

रामायण-
मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौन्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितं।।
महाभारत-
धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ।
यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत्क्वचित्।।
भागवत-
यावत् भ्रियेत जठरं तावत् स्वत्वं हि देहिनाम्।
अधिकं योऽ भिमन्येत स स्तेनो दण्डमर्हति।।
हितोपदेश-
पयःपानं भुजङ्गानां केवलं विषवर्धनं।
उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये।।
रघुवंश-
वागर्थाविव संपृक्तौ, वागर्थप्रतिपत्तये।
जगतः पितरौ वन्दे, पार्वतीपरमेश्वरौ।।
कुमार संभव-
अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराजः।
पूर्वापरौ तोयनिधीवगाह्य स्थितः पृथिव्यां इव मानदण्डः।।
अभिज्ञान शाकुन्तल-
भवन्ति नम्रास्तरवः फलोद्गमैः
नवाम्बुभिर्दूर विलम्बिनो घनाः।

कुछ लेखक अनुमोदित साहित्यिक पुस्तकें-

1) **Love story of a Yogi- what Patanjali says**
2) **Kundalini demystified- what Premyogi vajra says**
3) **कुण्डलिनी विज्ञान- एक आध्यात्मिक मनोविज्ञान-पुस्तक-1, पुस्तक-2, और पुस्तक-3**
4) **The art of self publishing and website creation**
5) **स्वयंप्रकाशन व वैबसाईट निर्माण की कला**
6) **कुण्डलिनी रहस्योद्घाटित- प्रेमयोगी वज्र क्या कहता है**
7) **बहुतकनीकी जैविक खेती एवं वर्षाजल संग्रहण के मूलभूत आधारस्तम्भ- एक खुशहाल एवं विकासशील गाँव की कहानी, एक पर्यावरणप्रेमी योगी की जुबानी**
8) **ई-रीडर पर मेरी कुण्डलिनी वैबसाईट**
9) **My kundalini website on e-reader**
10) **शरीरविज्ञान दर्शन- एक आधुनिक कुण्डलिनी तंत्र (एक योगी की प्रेमकथा)**
11) **श्रीकृष्णाज्ञाभिनन्दनम**
12) **सोलन की सर्वहित साधना**
13) **योगोपनिषदों में राजयोग**
14) **क्षेत्रपति बीजेश्वर महादेव**
15) **देवभूमि सोलन**
16) **मौलिक व्यक्तित्व के प्रेरक सूत्र**
17) **बघाटेश्वरी माँ शूलिनी**
18) **म्हारा बघाट**
19) **भाव सुमन: एक आधुनिक काव्यसुधा सरस**
20) **Kundalini science~a spiritual psychology- book-1, book-2, and book-3**

इन उपरोक्त पुस्तकों का वर्णन एमाजोन, ऑथर सेन्ट्रल, ऑथर पेज, प्रेमयोगी वज्र पर उपलब्ध है। इन पुस्तकों का वर्णन उनकी निजी वैबसाईट https://demystifyingkundalini.com/shop/ के वैबपेज "शॉप (लाईब्रेरी)" पर भी उपलब्ध है। साप्ताहिक रूप से नई पोस्ट (विशेषतः कुण्डलिनी से सम्बंधित) प्राप्त करने और नियमित संपर्क में बने रहने के लिए कृपया इस वैबसाईट,"https://demystifyingkundalini.com/" को निःशुल्क रूप में फोलो करें/इसकी सदस्यता लें।

सर्वत्रं शुभमस्तु